पाठ 18

शुंग सातवाहन एवं कुषाण काल

(200 ई.पू. से 300 ई. तक का भारत)

आइए सीखें

- 200 ई.पू. से 300 ई. तक का भारत की स्थिति कैसी थी।
- उत्तर भारत के राजवंशों के बारे में।
- दक्षिण भारत के राजवंशों के बारे में।

पाठ 12 में मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी दी गई थी। आपने पहले यह भी जाना कि दक्षिण में कई राज्य थे। मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद के समय की जानकारी इस पाठ में दी गई है। लगभग 200 ई.पू. से 300 ई. तक का समय भारत के इतिहास में अत्यधिक उथल-पुथल का समय माना जाता है।

उस समय के भारत में कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। जैसे शुंग, कण्व, सातवाहन, नाग, कुषाण, चोल पाण्डय और चेर इत्यादि प्रमुख थे।

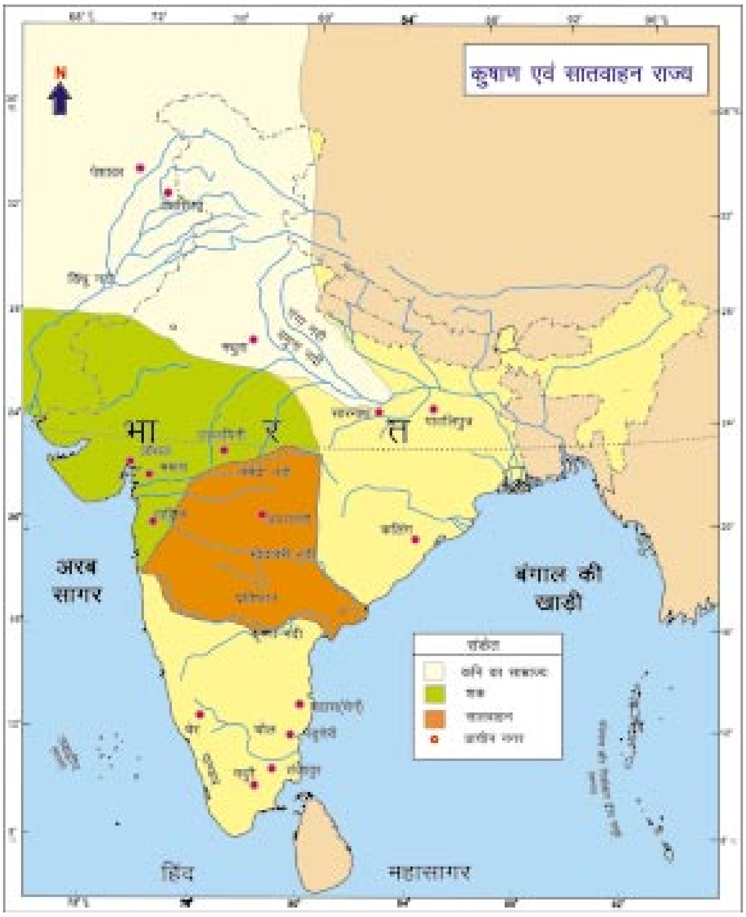

शुंग वंश - मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या करने के बाद पुष्यमित्र शुंग ने इस वंश की स्थापना 187 ई. पूर्व की।

मध्यप्रदेश के बेसनगर (विदिशा के पास एक स्थान) को शुंग राजाओं ने अपनी दूसरी राजधानी बनाया। यहीं पर यवन राजा एन्तीकस के राजदूत हैलियोडोरस का स्तंभ लेख है जिसमें उसके द्वारा भागवत धर्म स्वीकार करने की बात है। इसे स्थानीय लोग आज ''खाम्बबाबा'' कहते हैं।

खुदाई में यहाँ दूसरी शताब्दी ई.पू. के प्राचीनतम विष्णु मंदिर के प्रमाण मिले हैं। विदिशा में लुहांगी पहाड़ी पर शुंगकालीन स्तम्भ के अवशेष हैं। शुंग वंश में दस राजा हुए। पुष्यमित्र, अग्निमित्र, वासुदेव, भागभद्र आदि। इस वंश ने लगभग 112 वर्षों तक राज्य किया। उत्तर भारत के क्षेत्र में शुंग, कण्व, शक, नाग, कुषाण, हिन्द युनानी वंशों का शासन रहा था। जबकि दक्षिण भारत में सातवाहन, चोल, चेर, पाण्डय राजाओं का शासन था।

कण्व वंश - शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या करके उसके मंत्री वासुदेव कण्व ने इस वंश की स्थापना की। इस वंश में भूमिमित्र, नारायण तथा सुदर्शन राजा हुये।

शक - शक लोग उत्तर पश्चिमी दिशा से आए थे। शक शासकों में पहला शासक मोआ या मावेज था। किन्तु इस वंश में सबसे प्रसिद्ध राजा रुद्रदमन हुआ था। जिसने उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया था। उसके शासन काल में प्रजा अत्यधिक सुखी थी। उसने कृषि के विकास के लिए नहरें एवं बांध बनवाकर अच्छी सिंचाई व्यवस्था करने के साथ ही प्रजा के कर माफ कर दिये थे। उसने सातवाहन राजाओं को मध्यभारत से भगाकर आंध्रप्रदेश में बसने के लिए विवश कर दिया था। इस वंश के शासकों ने गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल तक शासन किया था।

सातवाहन - दक्षिण भारत में सबसे प्रमुख सात वाहन राजा थे। प्रारंभ में नर्मदा नदी के उत्तर तक इनका राज्य फैला हुआ था। लेकिन शकों ने इन्हें पराजित कर आंध्रप्रदेश की ओर धकेल दिया था। इसलिये इन्हें आंध्रभृत्य (सातवाहन) नाम से भी जाना जाता है। इस वंश का संस्थापक सिमुक था। इस वंश में सबसे प्रतापी राजा सातकर्णी और गौतमी पुत्र सातकर्णी हुए। जिनके शासनकाल में सातवाहन राज्य का सर्वाधिक विकास हुआ। सातवाहनों के पड़ोसी राजा 'शकों' से युद्ध होते रहे। जिनमें विजय कभी सातवाहनों की तो कभी शको की होती रही। अंत में गौतमी पुत्र सातकर्णी के बेटे वशिष्ठ पुत्र ने शक राजा की कन्या से विवाह कर शांति की स्थापना की। सातवाहन

साँची स्तूप का तोरण द्वार

राजाओं के समय जंगल साफ करके गाँव बसाये गए, गोदावरी और कृष्णा नदियों की घाटियों में आवागमन के लिए नई सड़कें बनायी गईं। सातवाहनों के समय व्यापारिक वृद्धि हुई। इस समय ईरान, इराक, अरब और मिस्त्र से व्यापार होता था। सातवाहन राज्य सुव्यवस्थित, कुशल प्रशासन युक्त तथा समृद्धिशाली था। साँची स्तूप के तोरणद्वार सातवाहनों के समय ही बने थे। वहाँ इनका अभिलेख भी है।

कुषाण- इनका मूल स्थान चीन था जहाँ से ई.सन् के आरंभ में इन लोगों ने भारत की ओर प्रस्थान किया और धीरे-धीरे गंगा मैदान के पश्चिमी भाग तक अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इसी वंश में कनिष्क प्रथम सबसे अधिक प्रसिद्ध राजा हुआ। जिसके शासन काल में राज्य में धर्म, साहित्य और कला का खूब विकास हुआ। कनिष्क के समय ही कुण्डलवन कश्मीर में चौथी बौद्ध महासभा हुई। इसमें बौद्ध धर्म की महायान शाखा को मान्यता मिली। इससे बुद्ध की मूर्ति बनायी जाने लगी जबकि पहले बुद्ध की मूर्ति नहीं बनाई जाती थी। शक संवत की शुरुआत भी कनिष्क ने की थी।

नागवंश- दूसरी शताब्दी ई. के अंतिम चरण में विदिशा, पवाया (पदमावतीनगर) कुतवार (कुंतलपुरी) तथा मथुरा क्षेत्र में एक नये राजवंश का उदय हुआ। जो नागवंश के नाम से प्रसिद्ध था। कुषाण वंश के अंतिम नरेशों की कमजोरी का पूरा लाभ उठाकर इस वंश के राजाओं ने अपना साम्राज्य विस्तार किया तथा विदेशियों को भारत से खदेड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चोल- चेन्नई के दक्षिण में स्थित वर्तमान तंजौर और तिरुचिरापल्ली के आस-पास के क्षेत्र पर चोल शासकों ने अपना अधिकार स्थापित किया था। इसलिए इस क्षेत्र को चोल मंडल के नाम से जाना जाता था। प्रारंभिक चोलों के बारे में ज्यादा जानकारी अभी ज्ञात नहीं है। दूसरी शताब्दी ई. में चोल वंश का प्रसिद्ध शासक कारिकाल था। उसने लंका पर आक्रमण किया और वहाँ से हजारों श्रमिक अपने साथ लाया, जिन्होंने कावेरी नदी पर बांध बनाया। पुरानी राजधानी उरैयूर के स्थान पर उसने नई राजधानी कावेरी पट्टिनाम बनाई।

चेर- चोल राज्य के पश्चिम में उसका पड़ोसी राज्य चेर था, जो आज के केरल मालाबोर के तटीय क्षेत्र में स्थापित था। अशोक के अभिलेखों में भी चेर, चोल,पाण्डय का उल्लेख मिलता है। चेर राजा नेडुचेरलादान को वीर शासक माना जाता है उसने न केवल कई राज्यों को जीता और रोम के जहाजी बेड़े को भी पकड़ लिया था।

पाण्डय- चोल राज्य के दक्षिण में पाण्डय राज्य था। इस राज्य की सीमा चेर राज्य से भी मिलती थी। यह राज्य आज के मदुरै और तिनेवली जिलों के आसपास के क्षेत्र में फैला था। अशोक के अभिलेख में इसका नाम आया था। एक पाण्डय राजा ने पहली शताब्दी ई.पू. में रोम के सम्राट अगस्टस के पास अपना राजदूत भेजा था। इनके शासन काल में विद्या और व्यापार ने अत्यधिक उन्नति की थी।

हिन्द यूनानी- सिकन्दर के उत्तराधिकारियों का ध्यान भारत के उत्तर पश्चिम सीमा क्षेत्र की ओर गया। जहाँ का व्यापार ईरान और पश्चिमी एशिया के साथ चलता था। उन्होंने गंधार क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित

किया। इन शासकों में मिनाण्डर सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ। उसने बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। तब उसका नाम मिलिन्द रखा गया था। यहां अनेक यूनानी शासकों पर हिन्दू धर्म का प्रभाव पड़ा। एक यवन (यूनानी) राजदूत हैलियोडोरस ने वैष्णव धर्म ग्रहण कर लिया और उसने बेसनगर (विदिशा) में एक गरुड़ स्तंभ बनवाया इसी पर एक अभिलेख खुदा हुआ है जिसमें लिखा है कि उसने यह स्तंभ लगवाया है।

जनजीवन- इस समय का जनजीवन आज से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। अधिकतर लोग किसान थे। उनके परिवार में लोग एक साथ मिल-जुलकर रहते थे। इस समय तक लोग वर्ण व्यवस्था को (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) अत्यधिक महत्व देने लगे थे। नृत्य, संगीत और काव्य पाठ से अधिकतर लोग अपना मनोरंजन करते थे। राजा ही राज्य का संचालन करता था। व्यापारियों की तरह ही लोग सामान या माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे तो उनको कर देना पड़ता था। उत्तर भारत के किसान दक्षिण भारत के किसानों से अधिक सम्पन्न थे। उत्तर भारत का क्षेत्र सिन्धु और गंगा का मैदानी भाग होने के कारण अधिक उपजाऊ था। इसी तरह दक्षिणी भारत एक पहाड़ी क्षेत्र था। इसलिए यहाँ कम उपजाऊ भूमि थी तथा यहाँ खेती करना कठिन था। वहाँ लोग पशु पालते थे। कुछ ऐसे नगर समुद्र के किनारे थे, जहाँ से व्यापार करना सहज था।

रोमन व्यापार- इस समय रोम के जहाज व्यापार करने के लिए मालावार और तमिलनाडु के पूर्वी तट पर आते थे, जो भारत से मसाले, कपड़े, कीमती पत्थर और बंदर व मोर जैसे पशु-पक्षी अपने साथ ले जाते थे और बदले में भारतीयों को बहुत सा धन एवं सोना प्राप्त होता था। इसलिए दक्षिण के लिये कहा जाता था कि दक्षिण भारत के राज्यों को रोम के सोने ने धनवान बना दिया था।

समाज एवं धर्म- इस काल में उत्तर भारत और दक्षिण भारत में धर्म की स्थिति अलग-अलग थी। उत्तर भारत में बौद्ध धर्म बहुत लोकप्रिय था। जनता को बौद्ध धर्म की शिक्षा देने के लिये उनके मध्य भिक्षुओं को भेजा जाता था। इस समय अश्वघोष और नागार्जुन के ग्रंथों ने बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ राजाओं के द्वारा जैन धर्म को भी राजाश्रय प्रदान किया गया था।

समाज में वैदिक धर्म भी पूर्ववत ही प्रचलित था, लेकिन इस काल में पहले के देवी-देवताओं को बदल दिया गया था, जो इस काल के प्रमुख विशेषता मानी जाती है। अब शिव, विष्णु तथा अन्य देवी-देवताओं की उपासना अधिक होने लगी थी तथा लोग यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठानों के बजाय ईश्वर की भक्ति को अधिक महत्व देने लगे थे।

दक्षिण भारत में यद्यपि बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के अनुयायी थे अपितु यहाँ पुराने वैदिक देवी-देवताओं की पूजा एवं धार्मिक अनुष्ठानों को अधिक महत्व दिया जाता था। तमिल लोगों का सबसे प्रसिद्ध देवता मुरुगन था, जिसे पर्वतवासी देवता भी कहा जाता था। इसी तरह समुद्र तट के निवासी समुद्र देवता की आराधना करते थे।

ईसा की पहली सदी में पश्चिम एशिया में एक नये धर्म का उदय हुआ और यहीं से यह धर्म भारत पहुंचा था। इसके जनक ईसा मसीह थे। ईसा के जन्म को आधार मानकर तिथि की गणना की जाती है। ईसा के जन्म के पहले की घटनाओं को ईसा पूर्व में और उसके बाद की घटनाओं को ईसवीं सन् लिखा जाने लगा।

संगम-साहित्य - वैदिक साहित्य का विकास पूर्ववत ही होता रहा किन्तु दक्षिण भारतीय इतिहास में यह अवधि संगम साहित्य के नाम से विशेष लोकप्रिय हुई। दरअसल कभी पहले दक्षिण भारत में तीन कवि परिषदों का आयोजन किया गया, जिसमें तीसरी कवि परिषद् मदुरै (पाण्डय राज्य) में आयोजित की गयी। उसमें कवि, भाट, चारण एकत्र हुए और अपनी रचनाएँ लिखी थी। जिन्हें आठ पुस्तकों में प्रस्तुत किया गया, जो आज भी उपलब्ध है। इसे ही संगम साहित्य कहा जाता है। इन पुस्तकों में दक्षिण भारत में कबीलों के सरदारों और साधारण लोगों के जीवन का वर्णन मिलता है।

विचारों का आदान-प्रदान- इस काल की प्रमुख विशेषता थी- विचारों का अदान-प्रदान। इस काल में भारतीय, विदेशियों के संपर्क में आये, जिससे भारतीय जीवन के विभिन्न पक्षों में धर्म कला एवं विज्ञान से संबंधित न केवल नवीन विचारों का प्रवेश हुआ वरन कई परिवर्तन भी हुए। भारत, ईरान और पश्चिम एशिया के संपर्क में आया साथ ही भारतीय वस्तुएं विदेशों में पहुँचने लगीं, जिससे भारत के तक्षशिला, उज्जैन और मथुरा जैसे नगरों का महत्व अधिक बढ़ गया था।

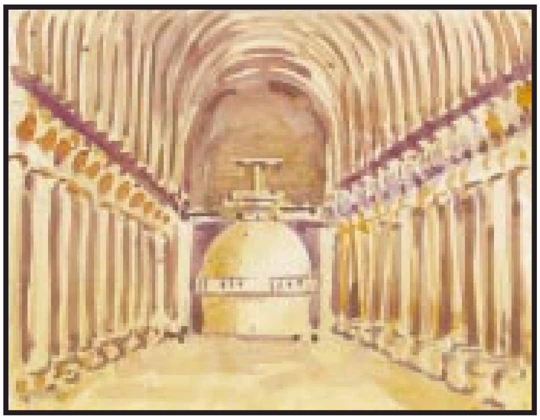

चैत्य हाल (कार्ले)

कला- इस काल में कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी। विशेषकर बौद्ध धर्म के क्षेत्र में सातवाहन राजाओं के शासनकाल में नगरों में रहने वाले व्यापारी और कारीगरों के धनवान होने के कारण उन्होंने बौद्ध विहारों को खुलकर दान दिया जिसका उपयोग चैत्य मण्डपों एवं स्तूपों की सजावट में किया गया तथा नवीन स्तूप बनवाए गए। इन स्तूपों में बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष रखे जाते थे, इसलिए इन्हें पवित्र माना जाता था। भोपाल के पास साँची स्थित है। यहाँ स्तूप की वेदिका (रैलिंग) और तोरणद्वार इसी काल में बनाये गये थे, जो अत्यंत सुंदर है। इसी काल में अमरावती स्तूप बनाया गया, साथ ही तक्षशिला (वर्तमान पाकिस्तान में) और सारनाथ (वाराणसी के निकट) में बौद्ध भिक्षुओं के रहने के लिए विहार बनाये गए। इसी तरह पुणे (महाराष्ट्र) के पास स्थित कार्ले बेदसा एवं भाजा के गुफा विहार इसी काल में बनाए गए थे। इसी अवधि में भारत में विदेशी मूर्ति कला का प्रवेश हुआ। परिणामस्वरूप यहाँ रोमन देवी-देवताओं जैसी मूर्तियाँ भी बनने लगी। इस क्षेत्र में गांधार प्रदेश के भारतीय कलाकारों ने विशेष रुचि लेकर बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक दृश्य पटल यूनानी शैली में बनाए। यह कला शैली 'गांधार कला' के नाम से लोकप्रिय हुई और पंजाब से कश्मीर तक फैल गई। गांधार के कलाकारों के अतिरिक्त मथुरा के कलाकारों ने बुद्ध की अनेक मूर्तियां बनाई

गयी। किन्तु उन्होंने यूनानी शैली की नकल नहीं की इसलिए उनकी शिल्पकला को मथुरा शैली के नाम से संबोधित किया गया।

इस प्रकार आपने देखा कि ई.पू. 200 से 300 ईस्वी तक के भारत के इतिहास में अनेक राजाओं ने शासन किया जो अलग-अलग वंश के थे। इस अवधि में साहित्य एवं कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई थी।

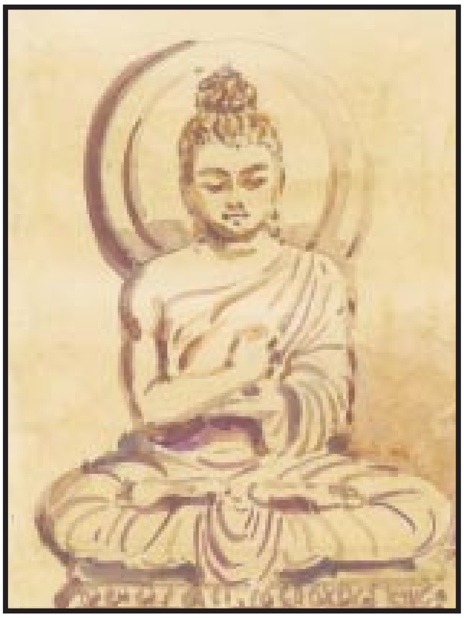

गांधार शैली की बुद्ध प्रतिमा

अभ्यास प्रश्न

1. अति लघुउत्तरीय प्रश्न-

अ. शुंग वंश की स्थापना किसने की थी?

ब. सातवाहन राज्य का संस्थापक कौन था?

स. कनिष्क के शासनकाल में चौथी बौद्ध सभा संगीति कहाँ हुई।

द. नाग-वंश का उदय कहाँ हुआ।

2. लघुउत्तरीय प्रश्न-

अ. भारत के इतिहास में 200 ई.पू. से 300 ई. तक का काल कैसा माना जाता है?

ब. उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश कौन से थे?

स. दक्षिण भारत के राजवंश कौन-कौन से थे।

द. संगम साहित्य में किसका वर्णन मिलता है।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

200 ई.पू. से 300 ई. तक की कला के बारे में लिखिए।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. शकवंश का सबसे प्रसिद्ध राजा .... था।

ब. मौर्य वंश का अंतिम शासक .... था।

स. कनिष्क ने .... में बौद्ध महासभा करवाई थी।

द. सातवाहन वंश का संस्थापक .... था।

5. जोड़ी बनाइए

अ.	ब.
अ. सातकर्णी	शक
ब. रुद्रदमन	शुंग
स. अग्निमित्र	कुषाण
द. कनिष्क	सातवाहन